'मैं पन' महान बनने नहीं देता

कई बार हमें लगता है कि मैं ही यह कार्य कर सकता हूँ, मेरे अलावा कोई कर ही नहीं सकता। मैं नहीं होता तो बड़ा नुकसान हो जाता। मैं नहीं होता तो यह कार्य संभव ही नहीं होता। यह जो 'मैं मैं मैं पन' का भाव, जो हम हर कर्म में रखते हैं, यही सबसे बड़ा भ्रम है। ये भ्रम ही उसके तनाव का कारण बनता है। यही दुःख का कारण बनता है।

हम आपको रामायण में आया एक प्रेरक प्रसंग बताना चाहते हैं...

हनुमान ने श्रीराम से कहा कि अशोक वाटिका में एक बार रावण क्रोध में भरकर तलवार लेकर सीता माँ को मारने के लिए दौड़ा, तब मुझे लगा कि इसकी तलवार छीन कर इसका सिर काट देना चाहिए। किन्तु अगले ही क्षण मैंने देखा कि मंदोदरी ने रावण का हाथ पकड़ लिया, यह देखकर मैं गद्गद् हो गया। यदि मैं कूद पड़ता तो मुझे भ्रम हो जाता कि यदि मैं न होता तो क्या होता!

- ब्र.कु. गंगाधर

मुझे यही लगता कि यदि मैं न होता तो सीता जी को कौन बचाता! परन्तु आज आपने उन्हें बचाया ही नहीं बल्कि बचाने का काम रावण की पत्नी को ही सौंप दिया। तब मैं समझ गया कि आप जिससे जो कार्य लेना चाहते हैं, वह उसी से ही लेते हैं, बाकी किसी का कोई महत्व नहीं है।

आगे चलकर जब त्रिजटा ने कहा कि लंका में बंदर आया हुआ है और वह लंका जलायेगा तो मैं बड़ी चिंता में पड़ गया कि प्रभु ने तो लंका जलाने के लिए कहा ही नहीं है और त्रिजटा कह रही है, तो मैं क्या करूँ? पर जब रावण के सैनिक तलवार लेकर मुझे मारने के लिए दौड़े तो मैंने अपने को बचाने के लिए तनिक भी चेष्टा नहीं की। पर जब विभीषण ने आकर कहा कि दूत को मारना अनीति है तो मैं समझ गया कि मुझे बचाने के लिए प्रभु ने यह उपाय कर दिया।

आश्चर्य की पराकाष्ठा तो तब हुई जब रावण ने कहा कि बंदर को मारा नहीं जायेगा पर पूँछ में कपड़ा लपेटकर, घी डालकर आग लगाई जाये तो मैं गद्गद् हो गया कि उस लंका वाली संत त्रिजटा की ही बात सच थी, वरना लंका को जलाने के लिए मैं कहाँ से घी, तेल, कपड़ा लाता और कहाँ आग ढूंढ़ता और वह प्रबंध भी आपने रावण से करा दिया। जब आप रावण से भी अपना काम करा लेते हैं तो मुझसे करा लेने में आश्चर्य की क्या बात है!

बहुधा हमें भी ऐसा ही भ्रम हो जाता है कि यदि मैं ना होता तो ये कार्य कैसे होता, मैं न होता तो कुछ हो ही नहीं पाता। परन्तु हमें ये जान लेना चाहिए कि यहाँ जो भी कार्य हो रहा है, वो ईश्वरीय विधान से हो रहा है। हम और आप तो केवल निमित्त मात्र हैं। इसलिए कभी भी ये भ्रम ना पालें कि मैं नहीं होता तो क्या होता!

दोस्तों, कर्म तो करना ही है पर कर्म करते 'मैं पन' व अभिमान ना आ जाये यह ध्यान रखना है। क्योंकि कर्म करते यह मैंपन ही दुःख का कारण बनता है। यही बात हर वक्त कर्म करते याद रखनी है। बेवजह अपने कर्म में मैंपन का विष घोलकर दुःख में वृद्धि नहीं करनी है। कहते हैं ना, पुण्यकर्म वहाँ बनता है जहाँ हमारी नियत साफ और श्रेष्ठ है। हमारी भावना ना किसी को दुःख पहुंचाने वाली हो, ना ही किसी को हानि। निःस्वार्थ भाव और शुद्ध नियत से किया गया कर्म ही पुण्य कर्म बनता है। परमात्मा ने हमें ये भी बताया है कि निमित्त भाव और नियत की विशुद्धि हो, तब ही वो पुण्य कर्म है। और इस विधि से किया गया कर्म पुण्य है और वो पुण्य कर्म ही आपके जीवन में सुख शांति और समृद्धि लाता है।

तो आप चाहते हैं ना कि आपका जीवन सुकून भरा हो, हर तरह से सम्पन्न हो, तो यही परमात्मा द्वारा बताई गई उच्चतम विधि है सुख शांति प्राप्त करने की। यही कर्म की कला हमें सीख लेनी होगी, वरना कर्म तो कर ही रहे हैं। कर्म करते 'मैं पन' और 'मेरा पन' का भाव ही पुण्यकर्म करने से रोक लेता है, जिससे हम जैसा चाहते हैं वैसा प्राप्त नहीं होता। मेरा कर्म मेरी ज़िन्दगी में सुकून की वृद्धि करता है या और ही दुःख की गर्त में ले जाता है? सोचना...। आप कैसा जीवन बनाना चाहते हैं ये आपके हाथ में है। ठीक है ना!

बीती को बीती कर वर्तमान में रह दृष्टि वृत्ति से सेवा करो

परमात्मा का यज्ञ कितना अच्छा चल रहा है। कमाल है मेरे बाबा की जो अव्यक्त हो करके इतना बड़ा यज्ञ चला रहा है। भगवान वन्डरफुल है तो उसका यज्ञ भी वन्डरफुल है। शब्दों में क्या वर्णन करूँ, पर जिन्होंने यज्ञ सेवा में आदि से लेकरके जैसे बाबा समर्पण हुआ ऐसे जिन्होंने सेवा की है, यह भी वन्डर है, उनका पद बहुत ऊँचा है। मैं घड़ी घड़ी पूछती हूँ, हे आत्मा, तुम इस शरीर में क्यों बैठी हो? बाबा को उल्हना देती हूँ। तो गुल्जार दादी ने लेटेस्ट मैसेज दिया बाबा से भी सहन नहीं होता है, पर यह बच्ची सहन कर रही है। यह सब देखते भी इस शरीर में बिठा दिया है। अभी समय थोड़ा है, बाबा को याद करना, बाबा को फॉलो करना हम लोगों के लिए ईज़ी हो गया है। कमाल है बाबा आपकी, हमको मनुष्य से ब्राह्मण ऐसा बनाया है। जो ब्राह्मण लाइफ इतनी सर्वोत्तम है। सारे कल्प के लिए यह कमाई है, सच्चाई भी है। सच्चाई और स्नेह परमात्मा कैसे देता है और दिया है देने के लिए। शरीर में निमित्त मात्र रहकर सदा ध्यान रहता है कि मैं कौन हूँ, किसकी हूँ, उसने क्या दिया, वो सब देखने जानने के लिए। सभी अन्दर से महसूस करते हैं यहाँ इनके पास क्या है? भले किसका कैसा भी स्वभाव है, भिन्न भिन्न संस्कार स्वभाव के लोग हैं...यज्ञ कैसे चलता है, बाबा जाने कैसे चला रहा है! कितना खर्चा होता होगा! तो ब्रह्मा बाबा की शब्दों में कोई महिमा नहीं कर सकते हैं।

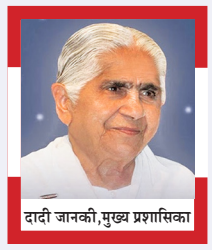
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

यह सारी पुरानी दुनिया खलास हो उसके लिए जैसे साइंसदान अपना काम कर रहे हैं, वैसे नई दुनिया बनाने के लिए साइलेंस से वही काम करेंगे क्योंकि हमको फिर वहाँ आना है और बाबा के साथ जाना है। भाग्यशाली हम हैं जो बाबा के साथ जा रहे हैं, पीछे पीछे नहीं। अभी हमारा हर संकल्प, श्वास और समय सफल होता रहे बस, बाबा और कुछ हमारे पास है ही नहीं। हमारा श्वास संकल्प सफल हो तो और क्या चाहिए!

प्रश्नः दृष्टि, वृत्ति और कृति से सेवा कैसे होती है? इसका थोड़ा सा स्पष्टीकरण करें।

उत्तरः इसका जवाब शब्दों में नहीं है, सूक्ष्म है। वृत्ति का कनेक्शन है स्मृति से। जैसे हमारी स्मृति में बाबा और बाबा की नॉलेज रहती है, उसमें भी मनोवृत्ति में ड्रामा, चक्र, झाड़ और सीढ़ी का ज्ञान भरा हुआ है। तो जो वृत्ति में होता है वैसी स्मृति बनती है, फिर वैसी दृष्टि हो जाती है। प्रेज़ेन्ट समय में प्रेज़ेन्ट रहना, जैसे भगवान को अपने सामने हूबहू देखना। सदा वह मेरे साथ प्रेज़ेन्ट है। हम भी प्रेज़ेन्ट में तभी रह सकते हैं, जब पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट की बात, घण्टे पहले की बात भी याद नहीं हो तो इसका बहुत फायदा होता है। सीढ़ी के ज्ञान अनुसार जो पास्ट हो गया पूरा हो गया, अभी उड़के ऊपर जाना है। फिर पता है हम ऐसे नीचे आयेंगे। उसके पहले एकांत में बैठके अन्दर में सच्चाई से, प्रेम से सतयुगी दुनिया की स्थापना का काम जो बाबा करा रहा है, वह एक्यूरेट करते रहना भी सेवा है। तो यह जो ज्ञान का सार है ना, वो स्मृति में रहे तो दृष्टि और वृत्ति काम करती है। सारे यज्ञ में इतनी सेवायें हो रही हैं, इसका खर्चा कितना होगा! वन्डर है। सिर्फ मुझे ईश्वरीय परिवार के लिए अन्दर से यह भावना है कि मैं मनी वेस्ट न करूँ। वेस्ट संकल्प नहीं चलें, जितनी एकानामी से चलते हैं उतना जैसे यज्ञ से प्यार है। आश्चर्य खाने की बात नहीं है, परन्तु बाबा कैसे अपना यज्ञ चला रहा है, हमें बाबा को फॉलो करना बहुत अच्छा लगता है। प्यारे बाबा की याद है ही फॉलो करना। बाबा मुझे अपने आप चला रहा है। यह भी प्रभु लीला है। सदा यही भावना रहती है कि सारे विश्व में शांति ऐसी आ जावे, जो कोई के भी अन्दर से दुःख की आवाज़ न निकले।

आत्मानुभूति से समस्याओं की समाप्ति

ओम शांति शब्द कहने से ही अपने स्वरूप की याद आ जाती है। यह भी एक मंत्र है। दूसरा बाबा शांति का सागर है उसकी भी स्मृति आती है और साथ साथ अपना घर जो शांतिधाम है उसकी भी स्मृति आ जाती है। तो जब भी हम ओम शांति शब्द बोलते हैं तो हमें तीनों की स्मृति आती है और स्मृति से समर्थी आती है। कैसी भी समस्या हो लेकिन तीनों ही याद आ जायें - स्वयं का रूप, बाप और अपना घर, अगर यह तीनों बातें आप अभी एक सेकण्ड में याद करो, अनुभव करो तो क्या कोई समस्या आपके आगे ठहर सकती है? जहाँ बाबा याद आ गया, अपने घर की याद आ गई, अपने स्वरूप की स्मृति आ गई वहाँ समस्या क्या होगी? लेकिन ओम शांति तो कह देते हैं, अर्थ स्मृति में नहीं आता है। तो कभी भी कोई भी समस्या आवे, जैसे आग लगती है तो फौरन क्या याद आता है? पानी। ऐसे जब हम ओम शांति कहते हैं और स्मृति स्वरूप हो जाते हैं, तो स्वतः ही सारी समस्यायें खत्म होंगी। जैसे यहाँ अंधियारा हो जाये और हम लाइट का स्विच ऑन करें तो अंधकार का स्वतः ही जाना निश्चित है। ऐसे ही यह भी अभ्यास अगर करो तो कोई भी बात आवे, तो अर्थ सहित तीनों याद से ओम शांति कहो तो समस्या ठहर नहीं सकती है। ऐसा अनुभव है?

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हम टीचर्स को गुरूभाई कहा है, गुरू के भाई, इतनी बड़ी सीट दी है ना। सभी मुरली सुनाते हैं ना। गुरू की जो गद्दी है, मुरली सुनाने की, वो बाबा ने किसको दी? टीचर्स को। कोई भाई वा कोई स्टूडेन्ट कहे हम भी रोज़ मुरली सुनायें तो आप देंगी, नहीं ना। टीचर को ही देते हैं इसलिए बाबा हमको गुरू भाई कहता है, तो बाबा ने महिमा भी की है टीचर्स की कि मेरे समान हैं, गुरूभाई हैं, लेकिन बाबा इशारा देता कि जो कुछ कहते हो उसका पहले अनुभव हो। मैं आत्मा हूँ, शरीर अलग है, आत्मा अलग है लेकिन आत्मा जिस समय अनुभव होगी, तो आत्म अभिमानी बनने से सेकण्ड में बाप के साथ कनेक्शन स्वतः ही जुट जायेगा। हम सब टीचर बने क्यों? सरेण्डर हुए क्यों? जब हम समर्पण हुए बाबा के प्रति तो सबसे पहले हमको बाबा के प्यार ही ने आकर्षित किया ना। ज्ञान तो पीछे समझा, चाहे बहनों द्वारा बाबा ने दिया, दादियों द्वारा दिया या टोली द्वारा मिला क्योंकि कइयों को टोली भी प्रेम की आकर्षण करती है। लेकिन पहले पहले परमात्म प्यार ने आपको आकर्षित किया। तो उसी प्यार में कोई खोये रहें तो आप सोचो उनकी स्थिति कितनी ऊंची और श्रेष्ठ होगी! फिर ऐसों के आगे समस्या और संस्कार क्या हैं, कुछ नहीं क्योंकि यही दो बातें सबको परेशान करती हैं जिसको कहते हैं हम चाहते नहीं हैं लेकिन मेरी नेचर ही ऐसी है। तो पहले यह सोचो कि समस्यायें क्यों आती हैं? पुरूषार्थ तीव्र क्यों नहीं होता है? कमजोरियाँ क्यों आती हैं? और चाहते भी खत्म नहीं हो पाती हैं तो उसका कारण क्या है? आत्म अनुभूति की कमी है। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करने के अभ्यास की कमी है। तो मैं कहने से ही आत्मा का रूप सामने आता है, अनुभव होता है? अगर आत्म अनुभूति नहीं हुई, तो कभी भी अविनाशी प्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है। सोचने से आयेगा अच्छा, मैं आत्मा सुख स्वरूप हूँ, शांत स्वरूप हूँ, प्रेम स्वरूप हूँ, परमात्मा के बच्चे हैं, ये सोचेंगे ज़रूर। एक है सोचना, एक है अनुभव करना। तो यह अपने से पूछो मुझे आत्मा का अनुभव है? अभी इस बात के अनुभवी बनने का अभ्यासी बनो, बाबा भी कहते इसकी थोड़ी कमी है। अगर अनुभव हो जाये तो वो भूलता नहीं है। बाबा कहते नॉलेजफुल बहुत हैं लेकिन अनुभवीमूर्त नहीं हैं। तो जो भी प्रॉब्लम्स हैं वो कर्म का ही सूक्ष्म रूप है, संस्कार का ही परिणाम सामने आता है इसीलिए बाबा समय प्रति समय हमको आत्म अभिमानी स्थिति का अनुभव करने के लिए कहता है।

बुराई प्रूफ बनकर परमात्मा को प्रूफ दो

परमपिता ने हमें पैगम्बर बनाया है, परन्तु पैगम्बर कभी कभी कहते मेरा माइन्ड डिस्टर्ब है। हूँ मैं निर्माण करने वाला लेकिन खुद का निर्माण करना मुझे नहीं आता। तो हम समझें कि हम दूसरों के लिए पंडित हैं। स्व से सृष्टि का निर्माण होगा या सृष्टि ये स्व का? तो हरेक चेक करो कि मैं स्व का निर्माण कर रहा हूँ? क्या निर्माण करने वाला कभी बिगड़ेगा? अगर मैं बिगड़ गई तो क्या मैं बिगड़ी को बनाने वाली हुई या बनी हुई को बिगाड़ने वाली? उस टाइम मैं पैगम्बर कौन सा संदेश सबको दूंगी? बिगड़ने का या निर्माण करने का? कइयो का मूड एकरस से निकल कर ऑफ हो जाता है। उस समय हमारी सूरत से कौन सा पैगाम मिलता है? नव निर्माण का? कई कहते मेरे में देह अभिमान बहुत है। पर बाबा तो जानता है ना कि हैं ही सब देह अभिमानी। मैं इन गिरी हुई आत्माओं को ही देही अभिमानी बनाने आया हूँ। फिर बाबा को क्यों कहते - मेरे में देह अभिमान है! अगर सर्जन को कोई पेशेन्ट कहे हे सर्जन मेरी तो वही बीमारी है, तो यह भी उसकी इनडायरेक्ट इनसल्ट हुई ना। अगर कहते मेरे में वही का वही देह अभिमान है तो बाबा का मैंने कितना रिस्पेक्ट किया! यही पढ़ाई की रिज़ल्ट सुनाई? बाबा ने पढ़ाया देही अभिमानी बनो, हम जवाब देते हमारे में देह अभिमान है। तो क्या यही प्यार का जवाब है? अगर अभी तक मेरे में वही देह अभिमान है तो शुद्र कुमार और ब्रह्माकुमार में अन्तर ही क्या रहा? फिर कहेंगे आप जो भी समझो।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

कहते हैं बाबा मुझे और कुछ नहीं चाहिए सिर्फ मुझे सभी प्यार से चलायें। मैं पूछती बाबा प्यार का सागर है, क्या वो प्यार नहीं दे रहा है, उनसे ज़्यादा और कोई प्यार देने वाला है? चलाने वाला बाबा या हम तुम? प्यार का सागर हमें प्यार से पाल रहा है। हमें नया जन्म दिया, वर्सा दे रहा है, हम उसकी पालना के अन्दर हैं, वह हमें अति प्यार से इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले चलता। कितनी बार कहता ओ मेरे मीठे मीठे बच्चे, यह कितने प्यार के बोल हैं। बाबा ने यह बोल सबके लिए बोला है या एक दो के लिए? तुम किसको बोलते कि हमें प्यार से चलाओ? किसको अक्ल सिखाते हो?

बाबा ने हमें मंत्र दे दिया - जो देखते हो वह न देखो, जो न दिखाई देता है उसे याद करो। भिन्न भिन्न संस्कार तो कर्मों का हिसाब किताब है। मुझे कर्म का खाता चुक्तू करना है, ना कि बनाना है। मैं सब हिसाब किताब चुक्तू करने, कर्मातीत बनने के लिए बैठी हूँ, फिर मैं अपना हिसाब किताब संस्कारों के वश क्यों बनाऊं! अगर हम हर घड़ी यही समझें कि हम स्टेज पर हैं, अगर कोई स्टेज पर बैठ मुड ऑफ करे, रोता रहे तो वह सबको अच्छा लगेगा? उस समय मुझे सबसे प्यार मिलेगा? स्टेज पर बैठ कर रोओ तो सब देखें कि मैं ब्रह्माकुमार कितना दुःखी हूँ, मैं कितना उदास हूँ, जब गुस्सा आता है तो स्टेज पर जाकर गुस्सा करो, सब देखें मेरा चेहरा कैसा है। मैं सुन्दर हूँ या काला हूँ! हूँ तो मैं पैगम्बर लेकिन क्रोध वाला हूँ। रोने वाला हूँ। शायद यह गुस्सा भी मेरी सर्विस करे? फिर देखने वाले कहते - इनका यही प्रैक्टिकल का ज्ञान है! कहते हैं मेरी वृत्ति दृष्टि खराब होती है, मैं कहती तुम खराब हो। बाबा हमें काले से गोरा बनाता फिर कहते दृष्टि खराब होती। खराब रावण है या राम? राम का होकर रहो। अगर सीता कहे मेरी तो वृत्ति खराब हो जाती तो राम पसन्द करेगा? राम के बच्चे होकर मेरी खराब वृत्ति जाती। लज्जा नहीं आती? फिर कहते क्या करें, संग ऐसा है तो ज़रूर रावण का संग है, बाप का तो नहीं है। हम अन्धों को बाबा ने लाठी दी, तीसरा नेत्र दिया। अब हम पुराने नहीं, हमारा पुराना जन्म खत्म हुआ, जब हमारा नया जन्म, हम नयी स्थापना में हैं फिर क्यों कहते हमारा तो पुराना संस्कार है। हमेशा समझो हम नयी स्थापना करने वाले, नये अधिकारी हैं, नया राज्य लेने वाले हैं। जब न्यू बर्थ हो गया तो पुराना हिसाब किताब समाप्त हुआ। ज्ञान कहता है सब बातों से प्रूफ हो जाओ। गुस्सा, उदासी, गन्दी वृत्ति सबसे प्रूफ। जब प्रूफ होंगे तो बाबा को प्रूफ दे सकेंगे। बाबा के सपूत बच्चे कहलायेंगे।